हेमराज बंसल

मन के मोती

रचना संग्रह २०२५

©

www.bansalasahitya.com

अनुक्रमणिका

का कर दिन्हों	1
दुख कुछ माँ को मत देना..	2
आप अपना साया	5
जाहि विधि राखे राम	7
इति चाय कचौरी क्लब	12
दोहे	16
कमीशन	18

© 2025 www.bansalasahitya.com

भजन

का कर दिन्हों...

का कर दिन्हो मां तूने पंडाल में आ के।
इस महफिल, जगराते,
मेरे द्वार सारे भक्तन नाच रहे हैं हाथ उठा के।
कर रहे आरती मां घी के दीप जलाके
सारे भक्तन नाच रहे हैं हाथ उठा के।
तेरी कृपा की अनुपम महिमा गा गा के।
सारे भक्तन नाच रहे हैं हाथ उठा के।
तेरी छवि के विलक्षण दर्शन पा पा के।
सारे भक्तन नाच रहे हैं हाथ उठा के।
तेरे नवरुपों की झांकी बना सजा के
सारे भक्तन नाच रहे हैं हाथ उठा के।
तोरे चरण की रज को माथे पे लगा के
सारे भक्तन नाच रहे हैं हाथ उठा के।
का कर दिन्हो मां तूने पंडाल में आ के।
सारे भक्तन नाच रहे हैं हाथ उठा के।

© 2025 www.bansalasahitya.com

दुख कुछ माँ को मत देना..

दुख कुछ मेरी माँ को मत देना भगवान।
संकट सब तुम उसके हर लेना भगवान।
पुण्य कोई अगर सञ्चित हो मेरा तो,
उसका सारा फल माँ को देना भगवान।
बहुत विपदा पहले सह चुकी है।
जर्जर इमारत सी ढह चुकी है।
थकती नही चाहे कटि झुकी है।
स्वर्ण सोपान में सांस रुकी है।
उसके सपनों को पूरा करना भगवान।
संकट सब तुम उसके हर लेना भगवान।
जिसके आँचल में हम पले हुये है।
अमृत पी छाती का बड़े हुये है।
मीठी लोरी से संस्कार गड़े हुये है।।
ऊँगली पकड़ जिसकी खड़े हुये है।
उसके उपकारों को भुला न देना भगवान।

© 2025 www.bansalasahitya.com

संकट सब तुम
सन्तान के दुःख में माँ रोती है
उसके खातिर गीले में सोती है
माँ नारी नहीँ कुलदेवी होती है
हमारे लिये सारे सुख खोती है।
ममता की मूरत की सुधि लेना भगवान।
संकट सब तुम
माँ ही कुल की रीत सिखाती।
माँ ही धर्म ध्वजा फहराती।
माँ ही रिश्ते नाते बतलाती।
माँ ही घर को स्वर्ग बनाती।
माँ का आशीष सदा बनाये रखना भगवान।
संकट सब तुम उसके हर लेना भगवान।
संकट सब तुम उसके हर लेना भगवान।
माँ भजन, माँ ही आराधना है।
माँ ही शक्ति, माँ ही साधना है।
माँ आरती, माँ ही उपासना है।
माँ से सिद्ध सब मनोकामना है।
माँ के चरणों में ध्यान लगा देना भगवान।
दुःख कुछ मेरी माँ को मत देना भगवान

© 2025 www.bansalasahitya.com

संकट सब
माँ का सुख हर्ष व दुख क्रंदन है।
सबसे पहले माँ को वन्दन है
मातृ चरण रज मलयज चन्दन है।
माँ बच्चो का अटूट बन्धन है।
मुझसे उसे दूर मत कर देना
दुख कुछ मेरी माँ को मत देना भगवान।
संकट सब तुम उसके हर लेना भगवान।
पुण्य कोई अगर सञ्चित हो मेरा तो,
उसका सारा फल माँ को देना भगवान।।

© 2025 www.bansalasahitya.com

गजल

आप अपना साया

आप अपना साया कुछ हटा लीजिए।
हवा पानी कुदरती आने दीजिये।
आप अपना साया कुछ हटा लीजिए।
रोशनी सूरज की आने दीजिए।
पेड़ माना लगाया सुकून के लिए।
रूह पर तो उसकी दावा न कीजिए।
बहुत चंचल होता है सोच इनका
अपनी डगर उसे खुद चुनने दीजिए।
सहेगी ना अंकुश वो कच्ची मिट्टी
अपने आप तुम उसे पकने दीजिए।
ज्यादा पानी देने से मरते दरख़्त
संघर्ष स्वयं उन्हें करने दीजिए।
अरमान होते हैं अलग अलग सबके
दखल अपना न इतना उनमें कीजिए।
टूट न जाए शाख सपनों के बोझ से

© 2025 www.bansalasahitya.com

अपने ख्वाबों को थोड़ा कम कीजिए।
कोई ना बढे कदम मौत की तरफ
हौसला अफजाई, हास्य कीजिए।
हार जीत हर जीवन के दो पहलू
निराश क्यों हो, कोशिश फिर कीजिए।
लक्ष्य असंभव तो भी रुकना नहीं
लक्ष्य आप अपना कुछ बदल लीजिए।
भूल जाते हैं धरती को, वट बनकर
भटक न जाए कदम, संस्कार दीजिए।
बहुत नाजुक बचपन, इन दरख़तों का
खिलवाड़ 'बंसल' इतना भी न कीजिए।
आप अपना साया कुछ हटा लीजिए।

© 2025 www.bansalasahitya.com

जाहि विधि राखे राम .

दिखता तो है, मैं स्वस्थ हूं , मस्त हूं।
अंदर की बात बताऊं ,सच कहूं ,
अनेक व्याधियों से ग्रस्त हूं।
मस्तिष्क थक सा गया है,
कई सूचनाएं विलोपित कर देता है।
बुरा मत मानना कभी मैं आपका नाम भूल जाऊं।
केश श्वेत हो चुके हैं या विदा ले चुके हैं।
कई शुभचिंतक टोकते हैं पर,
धवल उज्ज्वल शेष को क्यों मैं श्यामल करूं।
चर्म रोग एक्जिमा रजत जयंती मनाएगा।
मुक्तिधाम तक सच्ची निष्ठा निभाएगा।
नेत्र ज्योति डूब रही है
हर बार एनक भारी हो रही है
और अब तो मोतियाबिंद
हटाने की भी तैयारी हो रही है।
दो दो बूंद तीन बार दवा डालना

© 2025 www.bansalasahitya.com

या पढ़ना लिखना सिरदर्दी हो गया है।
टीवी मोबाइल कम्प्यूटर छूट सा गया है।
श्रवन शक्ति भी अब थकने लगी है
सुनते नहीं हो क्या,
वह सुनाने लगी है।
कर्ण खुजाल रात की नींद उड़ाती है।
पत्नी सरसों का गर्म तेल लाती है।
हर बदलते मौसम में नाक बहती है
पहले नजला फिर खांसी होती है।
बूढ़ी हड्डियों को जंग लग गया है।
घुटने का दर्द तो स्थाई हो गया है।
हर रोज नई तकलीफ आती, जाती है।
कहीं दर्द कहीं खुजली और
अक्सर नसों में ऐंठन हो जाती है।
कई बार हड्डियां टूट, जुड़ चुकी है।
शल्य चिकित्सा भी कई बार हो चुकी है।
जीमने जाने से कतराता हूं।

© 2025 www.bansalasahitya.com

रात में पेट दर्द न हो जाए,
संभल संभल कर खाता हूं।
कभी पाचक कभी रेचक लेता हूं।
मर्यादा का कभी उल्लंघन हो जाता है
अगले दिन स्वत ही लंघन हो जाता है।
चालीस के बाद घी चीनी नमक कम खाना है।
साल में एकाध बार बीपी, शुगर,
केलेस्ट्रोल की जांच भी करवाना है।
दांतों का इलाज बहुत दुखदाई है
हर बार डॉक्टर ने टोपी पहनाई है।
घंटो मुंह फाड़कर लेटे रहना पड़ता है।
फिर भी और मुंह खोलो सुनना पड़ता है।
नींद भगवान भरोसे हो गई है
कभी जल्दी आ जाती,
कभी देर तक जगाती
कई बार उठना पड़ता है,
कपड़े खराब न हो जाएं,

© 2025 www.bansalasahitya.com

डर से टायलेट भागना पड़ता है।
नर्म कोमल जीभ को दांत भले ही कई बार काट देता है।
पर उसी दांत की पीड़ा हरने में,
(फंसा तंतु निकालने में)
जिव्हा स्वयं को घायल कर लेती है।
सम वयस कई पृथ्वी लोक छोड़ गए हैं।
रब रजा, प्रभु कृपा! गॉड बैलेस,
हम अभी चल रहे है।
प्राकृतिक चिकित्सा, घरेलू नुस्खे, एलोपैथी,
आयुर्वेद, यूनानी, होम्योपैथी क्रमशः आजमाते हैं।
कई असाध्य रोग फिर भी ठीक नहीं हो पाते हैं।
आसन, भ्रमण, विचरण, कुंजन, प्राणायाम,
अनुलोम विलोम, कपाल भारती, दीर्घश्वांस, ओंकार, भ्रष्टिका, गरारे,
जिंदगी के चौथे पाए के बने नए सहारे।।

© 2025 www.bansalasahitya.com

बाम, विक्स, आयोडेक्स, चूरन, अवलेह
शीशी, बोतल, गोलियों के पत्ते
सिरहाने दवाइयों की तादाद बढ़ रही है
कब क्या लेना है सूची बनानी पड़ रही है।
थर्मामीटर, आक्सीमीटर, बीपी यंत्र, गर्म पानी की थैली,
शुगर मापक, भाप यंत्र न जाने क्या क्या बसा लिए हैं।
घरों में ही मिनी अस्पताल बना लिए हैं।
बुढ़ापे में कुछ तो होगा,
सब हंस हंस कर सह रहे हैं।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रह रहे हैं

© 2025 www.bansalasahitya.com

इति चाय कचौरी क्लब

लत पड़ी है देखो खान पान की
परवाह किसे यहां अपनी जान की।
चाय गरमा गरम। चाय गरमा गरम।

कचोरी गोपाल की नित आनी है
किसी को शंकर वाली खानी है।
ठाकर वाली भी पसंद पुरानी है।
हीरा हलवाई की अजमानी है।
मिठाई मांगे ठठेरा मिष्ठान्न की।
लत पड़ी है देखो खान पान की
परवाह किसे यहां अपनी जान की।
चाय गरमा गरम। चाय गरमा गरम।

© 2025 www.bansalasahitya.com

पोहा की सात पुड़िया भी लानी है।
जलेबी रविवार को मंगवानी है।
नई दुकान खुली जय भवानी है।
प्याज कचोरी और मिठाई खानी है।
मूंछें खिंच जाती है स्वाभिमान की।
लत पड़ी है देखो खान पान की,
परवाह किसे यहां अपनी जान की।
चाय गरमा गरम। चाय गरमा गरम।

दो मीठी बारह फीकी आती है।
कम चीनी, दो बूंद, भी भाती है।
इक दो से ज्यादा भी चल जाती है।
बड़ा गिलास या डिब्बी सुहाती है।

© 2025 www.bansalasahitya.com

मधुमेह बीपी हमारी पहचान की।
लत पड़ी है देखो खान पान की
परवाह किसे यहां अपनी जान की।
चाय गरमा गरम। चाय गरमा गरम।

पोहा कचोरी समोसा खाना है।
खास दिन उत्साह से मनाना है।
खुशी के बहाने मिठाई लाना है ।
बस पैसा जेब से निकलवाना है ।
पहना कर माला एक सम्मान की।
लत पड़ी है देखो खान पान की
परवाह किसे यहां अपनी जान की।
चाय गरमा गरम। चाय गरमा गरम।।

© 2025 www.bansalasahitya.com

अब पार्क में तो कुछ ही जाते है
कई प्रार्थना से भी कतराते हैं
दौड़े प्रताप चौक पर आते हैं
बिगड़ी सेहत अपनी बनाते हैं
चर्चा शहर में हमारी शान की
लत पड़ी है देखो खान पान की
परवाह किसे यहां अपनी जान की।
चाय गरमा गरम। चाय गरमा गरम

© 2025 www.bansalasahitya.com

दोहे

प्रथम वंदन राष्ट्र को, धन्य अब्दुल कलाम।
मित्र अबकी बार चलो ,शिवशक्ति नया धाम।
देश को सम्मान मिला, विचरे चंद्र प्रज्ञान।
विश्व भर में गूंज रहा,जय जय हिंदुस्तान।
दीन दुखी का कष्ट हरण ईश्वर पूजा समान
माता पिता गुरु की सेवा ही तीर्थ कुंभ स्नान।
बगुले की संगत करी, हंसा बदला ढंग।
जीभ चटोरी ने किया , ठाकुर भिक्षुक संग।
मुझ से तुझ से छीन कर, दातार बना कोइ।
तेल जला बाती जली, नाम दिया का होइ।
माटी मेरे देश की, इतनी निर्मल होय,
आंच दहन के बाद भी, देवे शीतल तोय।

© 2025 www.bansalasahitya.com

क्षणिकाएं (हाइकु)
दुर्लभ हुए।
विप्र,काक, गौ, श्वान।
श्राद्ध अपूर्ण।

जिमाया काक
निकृष्ट को सम्मान
पितृ पक्ष में।

कनागत में
संतुष्ट होंगे पितृ
काक भोज से।

दुष्ट संहारूं।
राम जैसी शक्ति दे।
बल भक्ति दे।

© 2025 www.bansalasahitya.com

कमीशन

कमीशन भ्रष्टाचार नहीं शिष्टाचार बन गया है,
कुर्सी का सम्मान बन गया है।
शादी योग्य युवकों की वेतन से ज्यादा
ऊपरी कमाई की जानकारी ली जाती है ।
हे मेरे देश की भोली जनता,
जब कुर्सी लाखों करोड़ों में मिलेगी,
बिकेगी या खरीदी जाएगी,
तो आपका काम मुफ्त में करके वह मुनाफा कैसे कमाएगी?
राजनीति भी तो बहुत बड़ा व्यापार, उद्योग है।
इसमें रिस्क जोखिम बहुत ज्यादा
100 प्रतिशत तक है।
मेरे एक बोरी माल लेकर बेचने में
ज्यादा से ज्यादा 2/5 टका नफा नुकसान होगा।
यहां तो असफल होने पर सब कुछ चला जाता है।
इस धंधे में पैसा लगाने के लिए बहुत बड़ा दिल चाहिए।

© 2025 www.bansalasahitya.com

अर्थशास्त्र का सिद्धांत है
ज्यादा जोखिम ज्यादा मुनाफा।
more risk more profit,
यहां पूरी तरह लागू होता है।
सफल होने पर सात पीढ़ियां तर जाती है।
रिश्वत देने लेने का धंधा पूरी ईमानदारी से होता है।
में एक व्यापारी हूं, मेरी तो जिंदगी ही हो गई।
डील होने के बाद काम पक्का हो जाता है
हम देकर भी खुश रहते हैं।
बल्कि न देने वालों से ज्यादा सुखी रहते हैं ।
लेने वाले के सुख की मुझे जानकारी नहीं है,
क्योंकि मैंने कभी लेने के सुख को भोगा ही नहीं।
कभी काम न हो पाए तो डील की
मुद्रा ईमानदारी से वापस आ जाती है।

© 2025 www.bansalasahitya.com

जाने- माने लेने वाले,
समाज में शान व सम्मान की
जिंदगी जीते हैं, व जी रहे हैं।
कभि कोई, देशद्रोही दुश्मन उलझा भी दे तो
ले दे के ससम्मान बरी हो जाते हैं।
मेरा शहर, मेरा राज्य, मेरा देश ही नहीं,
पूरा विश्व ही इस व्यवस्था पर दौड़ रहा है

© 2025 www.bansalasahitya.com